हुसैन का बलिदान

लेखक : श्री श्रीमत भदन्त बोधानन्द महासितौर
हिन्दी अनुवाद : जनाब मिर्ज़ा सज्जाद हुसैन साहब

भली भांति विचार करने पर हमें मानव 4 श्रेणियों में विभक्त दिखलायी पड़ते हैं। प्रथम नरकीय कोटि के प्राणी हैं जो प्रत्येक क्षण जुआ, मदिरा,—पान, भोग विलास, धन सम्पत्ति, लूटने आदि पापों में ही तल्लीन रहते हैं। कभी पुण्य कर्मों की ओर उनका ध्यान ही नहीं जाता, अपितु सद्मार्गियों को ये खिल्ली—पात्र समझते हैं। उनकी हंसी उड़ाते हैं। द्वितीय स्वर्ग कोटि के मानव अथवा देवता हैं जो उत्तमोत्तम सुखों का भोग करते हैं और आनन्दित होते हैं एंव साहस्य मनुष्यों के सुख का अकेले ही भोग करते हैं। ये मनुष्य दूसरों को अपने ऊपर जाने देना अर्थात दूसरों को अपने से उच्च पदाधिकारी हुए देखना तो क्या अपने समान होते देखना पसन्द नहीं करते सदैव औरों को अपने से नीचा एंव तुच्छ देखना चाहते हैं। उनका कहना है कि हमारी दासता में जो रहेगा वह सुख को प्राप्त करेगा। जो विरोध करेगा वह दन्ड—भोगी होगा। ये लोग अपने अधिकारों एंव अपने सुखों को स्थायी बनाये रखने के लिए एंव उसमें और भी विकास करने के लिए बहुत पूजा—भक्ति दान पुण्य भी करते हैं तथा अपनी कुशलना एंव मंगलता के लिए प्रार्थनाएं भी करते हैं। इस प्रकार के मनुष्यों में देवता भी सम्मिलित हैं जैसा कि तुलसीदास जी ने अपनी रामायण के उत्तराकान्ड में लिखा है।

इन्दरन द्वार भरोखा नाना।
तन तन सुर बैठ करी थाना
ओत देखें विश्य बिहारी।
ते हत्थी देन्ह कपाट उधारी
जब सू पर भनजन उर गुरू आयी।
अब हैं दीप व ज्ञान बुझायी
ग्रन्थी न छुटी मिटा सुर प्रकाश।
बुद्धि बिकल भयी विश्व बताया
इन्दर नह सुर न ज्ञान सुहायी।
विश्व भोग पर प्रीति सदायी

(अर्थ) शरीर में पंच प्रमुख इन्द्रियों के जो समस्त कपाट हैं प्रत्येक पर देवता अपना अड्डा जमाये हुए हैं वे लोग जब काम वासनाओं की हवा को आते हुए देखते हैं तो तत्काल ही कपाट खोल देते हैं एंव जब ये काम—वासनाओं की हवा हमारे हृदय में घर कर लेती है तो यह हमारे ज्ञान—दीप को बुझा देती है तथा पदार्थ एंव आत्मा में जो गुत्थी पड़ी हुई है वह नहीं खुल पाती। इस समय स्वभाव, प्रकृति एंव खरा खोटा परखने वाली बुद्धि इस वायु की आंधी से व्याकुल हो जाती है। वास्तविकता तो यह है कि ज्ञान एंव प्रकाश इन इन्द्रियों के देवताओं को भला नहीं लगता। काम—भावनाओं एंव सुख—भोग की इच्छाओं से ही इनको प्रेम है। भाव यह है कि देवता कोटि के मानव इसको कदापि पसन्द नहीं करते कि सर्व साधारण असत्य की पूजा को छोड़कर सत्य—पूजक एंव ईश्वर—भक्त बन जाए क्यों कि उन्हें भय है कि यदि सर्व—साधारण मानव सत्य के भक्त बन जाएंगे तो फिर देवताओं की पूजा कौन करेगा? यथाकारण वे इन्हें यत्नपूर्वक नाशुक वस्तुओं की पूजा में लगाये रखते हैं अर्थात वे मनुष्यों को सदैव असत्य मार्ग पर चलाते हैं।

तृतीय श्रेणी में मोक्ष अढ़त्ट कोटि के मानव हैं ये लोग सांसारिक सुखों की प्राप्ति से घृणा सी करते हैं क्यों कि सांसारिक वैभव एंव सुख बिना किसी को कष्ट पंहुचाये हुए प्राप्त नहीं होते। जब हम ध्यान पूर्वक देखते हैं तो ज्ञात होता है कि एक का सुख दूसरे के कष्ट पर, एक की स्वतन्त्रता दूसरे की दासता पर एंव एक का जीवन दूसरे की मृत्यु पर अवलंबित है। आदि आदि।

दूसरा पहलू इसका यह हैं कि जिस सुख की प्राप्ति के हेतु आज हम भगीरथ–प्रयास कर रहे हैं कल वह हमारे लिए साधारण हो जाता है, एंव उससे बड़े (अधिक) सुख की इच्छा उत्पन्न हो जाती हैं एंव हम उसके लिए उत्सुक हो उठते हैं। इसी प्रकार बड़े से बड़े ऐश्वर्य, सुख एंव वैभव–प्राप्ति का सिलसिला क्रमशः लगा रहता है एंव उत्सुक एंव व्याकुल होते रहते हैं। यही कारण है कि इस संसार के भीतर महान ज्ञानियों एंव पण्डितों के मस्तिष्कों में मोक्ष (निज़ात) का विचार उत्पन्न हुआ तथा खोज होने लगी।

इस वास्तविकता का अनुभव करके एंव संसारिक सुखों को दुख व कष्ट का कारण जानकर वे लोग त्यागी हो गये एंव मुक्ति तथा मोक्ष प्राप्त करने का यत्न करने लगे क्योंकि मोक्ष अथवा मुक्ति वह परम शान्ति है जिसे प्राप्त कर लेने के पश्चात् कुछ प्राप्त करना शेष नहीं रह जाता।

मलिक मोहम्मद जायसी ने इसकी कुछ झलक अपनी पदमावत में इस प्रकार दिखाई हैः–

अर्थात वह दशा एंव स्थान जहां पंहुचने के बाद फिर लौट कर नहीं आता।

चौथी श्रेणी के मानव वे हैं जिन्हें हम बुद्धिमत्व कहते हैं ये लोग भी सांसारिक सुखों मे फँसना अच्छा नहीं समझते बल्कि उन्हें व्यर्थ जानते हैं एंव मानव जाति का प्रमुख ध्येय मोक्ष–प्राप्त को समझते हैं किन्तु इनका कहना है कि केवल अपनी मुक्ति अथवा मोक्ष–प्राप्ति के हेतु एकान्तवासी हो जाना अथवा ध्यान–समाधि द्वारा प्रयत्न करना पर्याप्त नहीं है बल्कि समस्त मानव जाति की मोक्ष–प्राप्ति के लिए यत्न करना नितान्त आवश्यक है एंव हमारा अनिवार्य–कर्तव्य है । ये लोग पतितों का उद्धार, भूले भटकों को सद्मार्ग पर लाना तथा सत्य एंव न्याय के हेतु त्याग व अपना बलिदान करना कर्तव्य समझते हैं।

मैं इमाम हुसैन को इसी कोटि का मानव समझता हूँ। उन्होंने कर्बला के मैदान में अपना अपने पुत्रों, सम्बन्धियों एंव अपने प्रिय मित्रों (साथियों) का अति महान बलिदान किया किन्तु एक दृष्ट एंव चरित्रहीन शासक के आगे अनुचित रूप से शीश नवाना उचित न समझा। यदि वह यज़ीद को धार्मिक अधिष्ठाता व उत्तराधिकारी (ख़लीफा) स्वीकार कर लेते तो वह स्वयं अपना जीवन अति सुखपूर्वक व्यतीत कर सकते थे किन्तु उन्होंने अपने निजी व व्यक्तिगत सुचा को ठुकराया, यथाकारण मैं इमाम हुसैन को बहुत प्यार एंव आदर की दृष्टि से देखता हूँ।

इमाम हुसैन का यह बलिदान एंव भेंट हिन्दू, बुद्ध, जैन, मुसलमान, ईसाई, पारसी इत्यादि सभी धर्मो के लिए पालन–योग्य है। सबको इससे शिक्षा ग्रहण करना चाहिए।

इस्लाम के दृष्टिकोणानुसार पंजतने पाक अर्थात हज़रत मुहम्मद, उनकी सुपुत्री हज़रत फ़ातिमा उनके दामाद हज़रत अली तथा मोहम्मद साहब के दोनों नाती हज़रत इमाम हसन और इमाम हुसैन ये पाँच देवता तुल्य मानव अत्यन्त पवित्र हैं एंव इनके शरीर प्रत्येक अपवित्रता एंव, अवगुण से रहित हैं तथा इनके शरीर उन वस्तुओं से निर्मित नहीं हैं जिनसे सर्व–साधारण के अपितु इनके शरीर पवित्र आध्यात्मिकता रूहानियत) से परिपूर्ण हैं जैसे कि शक्कर के खिलौने के भीतर–बाहर सब तरफ तथा प्रत्येक अंग एक सी मिठास से भरा होता है एंव इन पाँचों में इमाम हुसैन को वह स्थान प्राप्त है कि स्वयं हज़रत मोहम्मद उन्हें सबसे अधिक प्यार करते थे। जब हज़रत मोहम्मद मिम्बर (एक उच्च स्थान जहां बैठकर मस्जिद में प्रवचनादि दिया जाता है) पर बैठे हुए अल्लाही संदेश सुना रहे होते तो उस समय यदि कभी इमाम हुसैन पंहुच जाते तो आप इमाम हुसैन को प्रेमपूर्वक बुलाते तथा उन्हें अपनी गोद में बिठाकर भाषण प्रारम्भ कर देते थे। हज़रत मोहम्मद के पास इस से बढ़कर कोई प्यार नहीं हो सकता था तथा आप का यह प्यार केवल इमाम हुसैन ने अपने नाना हज़रत मोहम्मद के पवित्र धर्म इस्लाम के लिए कर्बला के मैदान में अपना अद्वितीय बलिदान देकर चुका दिया।

कर्बला की हृदय–वेधक घटना की स्मृति एंव इमाम हुसैन का महान त्याग एंव बलिदान के मूल्यस्वरूप अब तक लाखों भाई प्रत्येक वर्ष मोहर्रम के दिनों में शोक मनाते एंव विलाप करते हैं।

इतिहास के पृष्ठों में इमाम हुसैन की भांति कोई ऐसी घटना नहीं मिलती जिसके लिए लाखों मनुष्य प्रति वर्ष शोक व विलाप करते एंव अश्रु–धारा प्रवाहित करते हैं।

(इमामिया मिशन, लखनऊ प्रकाशन नं0 300)